



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

## जन्मपत्रिका

vijay kumar kushwaha  
20/09/1984 10:10 PM  
Jaisalmer, Rajasthan

विर्मित



# सामान्य कुंडली विवरण

## सामान्य विवरण

जन्म दिनांक	20/09/1984
जन्म समय	22:10
जन्म स्थान	Jaisalmer, Rajasthan
अक्षांश	26 N 54
देशांतर	70 E 54
समय क्षेत्र	+05:30
अयनांश	23:38:37
सूर्योदय	6:33:50
सूर्यास्त	18:45:13

## घात चक्र

महीना	मुगशिरा
तिथि	5,10,15
दिन	शनिवार
नक्षत्र	हस्त
योग	शुक्ल
करण	शुकुनि
प्रहर	4
चंद्र	9

## पंचांग विवरण

तिथि	कृष्ण दशमी
योग	परिघ
नक्षत्र	पुनर्वसु
करण	विष्टि

## ज्योतिषीय विवरण

वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
योनि	मार्जार
गण	देव
नाड़ी	आदि
जन्म राशि	कर्क
राशि स्वामी	चन्द्र
नक्षत्र	पुनर्वसु
नक्षत्र स्वामी	गुरु
चरण	4
युज्जा	मध्य
तत्त्व	जल
नामाक्षर	ही
पाया	चांदी
लग्न	वृष
लग्न स्वामी	शुक्र

# ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	कन्या	04:14:42	बुध	उत्तर फाल्गुनी	सूर्य	5
चन्द्र	--	कर्क	02:46:31	चन्द्र	पुनर्वसु	गुरु	3
मंगल	--	वृश्चिक	26:34:44	मंगल	ज्येष्ठा	बुध	7
बुध	--	सिंह	18:38:00	सूर्य	पूर्व फाल्गुनी	शुक्र	4
गुरु	--	धनु	10:13:26	गुरु	मूल	केतु	8
शुक्र	--	तुला	00:15:55	शुक्र	चित्रा	मंगल	6
शनि	--	तुला	19:40:28	शुक्र	स्वाति	राहु	6
राहु	हाँ	वृष	06:55:32	शुक्र	कृतिका	सूर्य	1
केतु	हाँ	वृश्चिक	06:55:32	मंगल	अनुराधा	शनि	7
लग्न	--	वृष	10:12:38	शुक्र	रोहिणी	चन्द्र	1



**सूर्य**

कन्या  
उत्तर फाल्गुनी

लाभप्रद



**चन्द्र**

कर्क  
पुनर्वसु

हानिप्रद



**मंगल**

वृश्चिक  
ज्येष्ठा

लाभप्रद



**बुध**

सिंह  
पूर्व फाल्गुनी

लाभप्रद



**गुरु**

धनु  
मूल

हानिप्रद



**शुक्र**

तुला  
चित्रा

सम



**शनि**

तुला  
स्वाति

योगकारक



**राहु**

वृष  
कृतिका

--



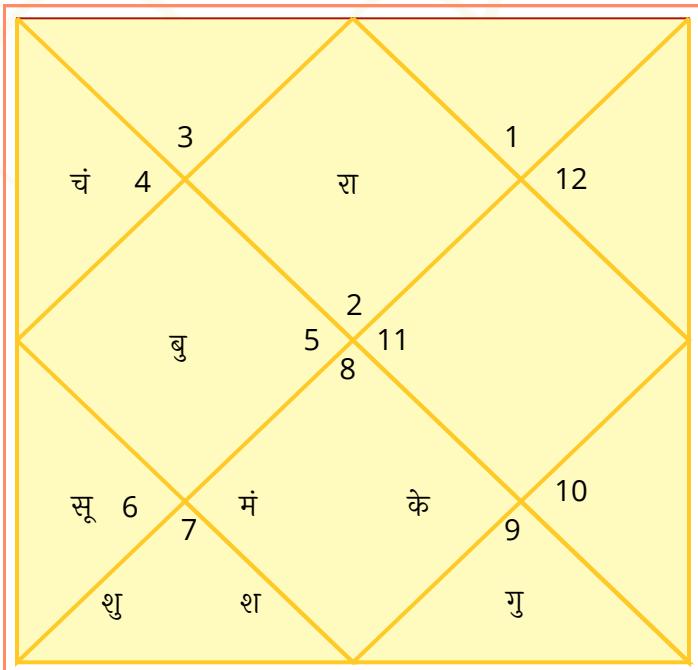
**केतु**

वृश्चिक  
अनुराधा

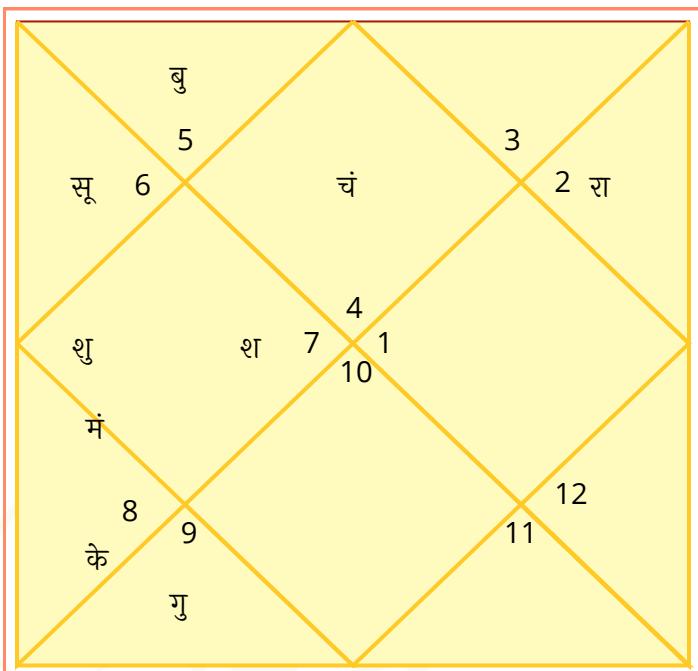
--

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली

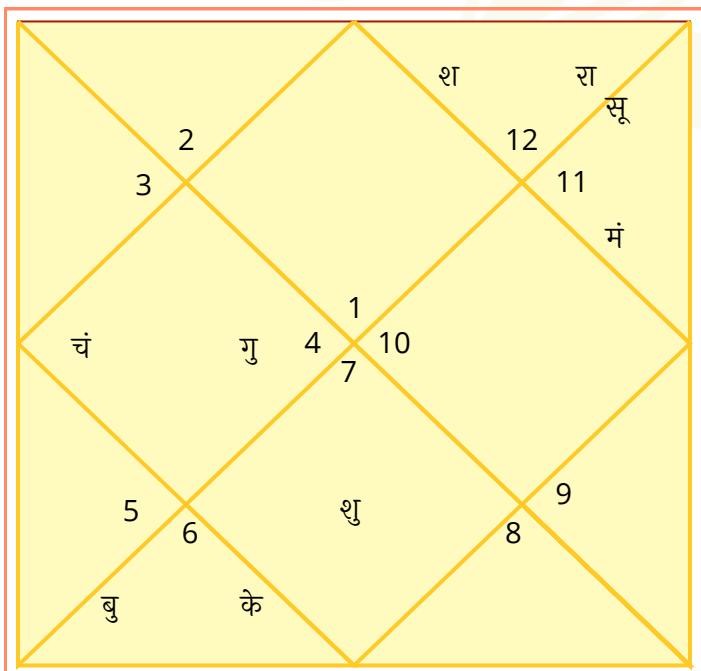


व्यक्ति के जन्म के समय आकाश में पूर्वी क्षितिज जो राशि उदित होती है, उसे ही उसके लग्न की संज्ञा दी जाती है। जन्म कुण्डली में 12 भाव होते हैं। इन 12 भावों में से प्रथम भाव को लग्न कहा जाता है। कुण्डली में अन्य सभी भावों की तुलना में लग्न को सबसे अधिक महत्व पूर्ण माना जाता है। लग्न भाव बालक के स्वभाव, रुचि, विशेषताओं और चरित्र के गुणों को प्रकट करता है।



## चंद्र कुण्डली

लग्न कुण्डली के बाद जिस राशि में चंद्रमा होता है उसे लग्न मानकर एक और कुण्डली का विर्माण होता है जो चंद्र कुण्डली कहलाती है। चंद्र कुण्डली का भी फलित ज्योतिष में लग्न कुण्डली जितना ही महत्व है। लग्न शरीर, तो चंद्र मन का कारक है और वे एक दूसरे के पूरक हैं।

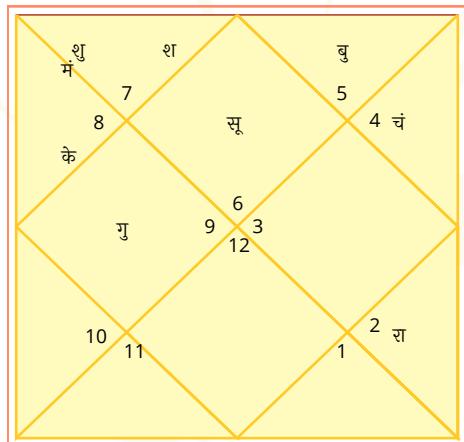


## नवमांश कुण्डली

नवांश कुण्डली को नौ भागों में बाटा जाता है, जिसके आधार पर जन्म कुण्डली का विवेचन होता है। नवांश कुण्डली में यदि ग्रह अच्छी स्थिति या उच्च के हों तो वर्गोत्तम की स्थित उत्पन्न होती है और व्यक्ति शारीरिक व आत्मिक रूप से स्वस्थ हो शुभ दायक स्थिति को पाता है।

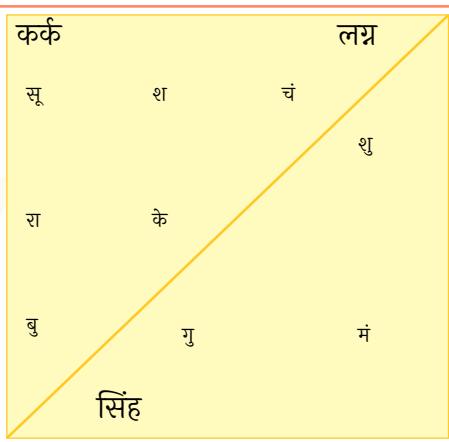
# वर्ग कुंडली

## सूर्य कुंडली



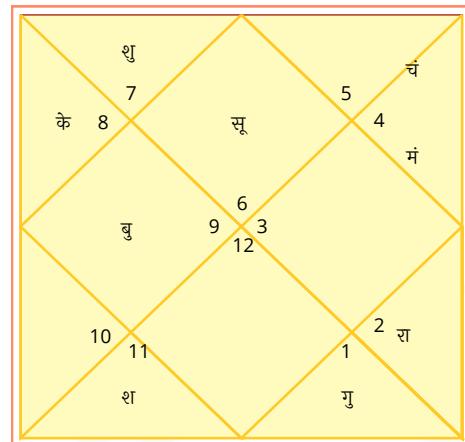
शरीर, स्वास्थ्य, रचना

## होरा कुंडली



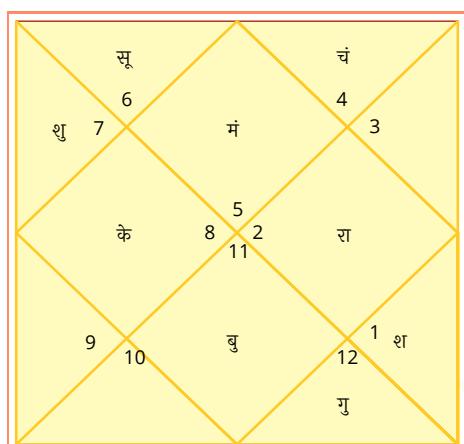
वित्त, धन -सम्पदा, समृद्धि

## द्रेष्काण कुंडली



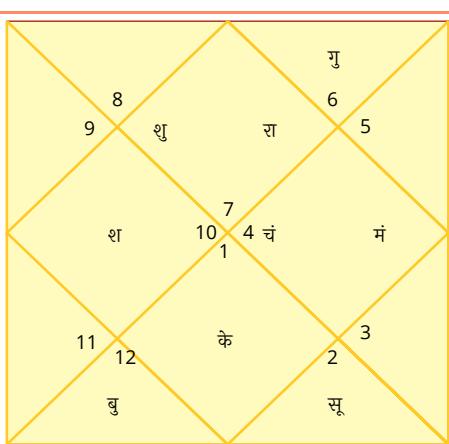
भाई बहन

## चतुर्थांश कुंडली



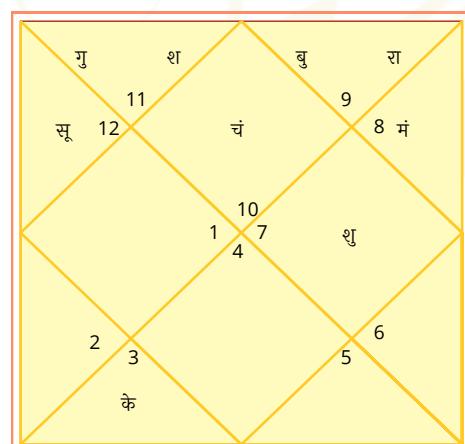
भाग्य

## पंचमांश कुंडली



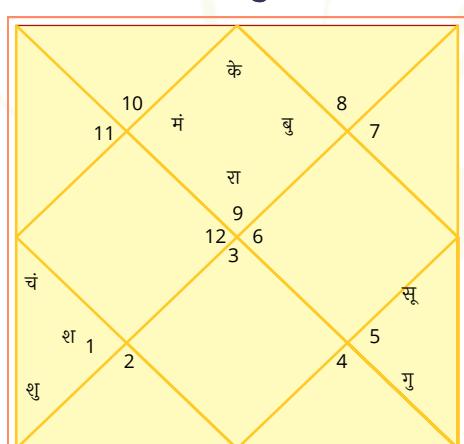
आध्यात्मिकता

## सप्तमांश कुंडली



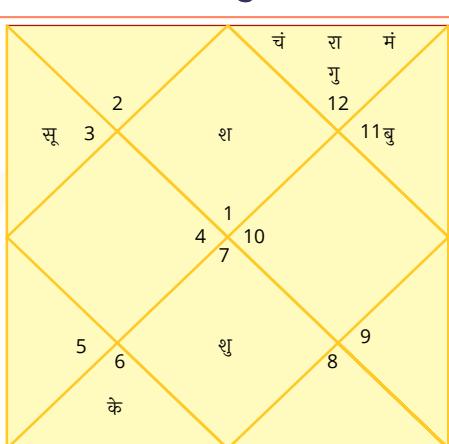
सन्तान

## अष्टमांश कुंडली



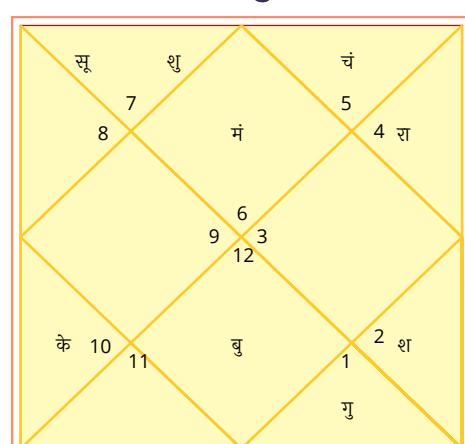
आयु

## दशमांश कुंडली



व्यवसाय, जीवनयापन

## द्वादशांश कुंडली

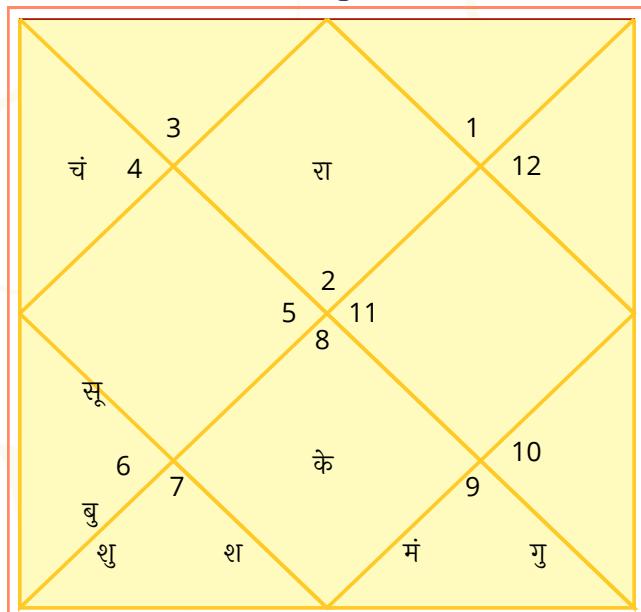


माता-पिता, पैतृक सुख

**लग्न - 10:12:38 दशम भाव मध्य - 24:34:39**

भाव	जन्म राशि	भाव मध्य	जन्म राशि	भाव संधि
1	वृष	10:12:38	वृष	22:36:18
2	मिथुन	04:59:59	मिथुन	17:23:39
3	मिथुन	29:47:19	कर्क	12:10:59
4	कर्क	24:34:39	सिंह	12:10:59
5	सिंह	29:47:19	कन्या	17:23:39
6	तुला	04:59:59	तुला	22:36:18
7	वृश्चिक	10:12:38	वृश्चिक	22:36:18
8	घनु	04:59:59	घनु	17:23:39
9	घनु	29:47:19	मकर	12:10:59
10	मकर	24:34:39	कुम्भ	12:10:59
11	कुम्भ	29:47:19	मीन	17:23:39
12	मेष	04:59:59	मेष	22:36:18

## चलित कुंडली



लग्न कुंडली का शोधन चलित कुंडली है, अंतर सिर्फ इतना है कि लग्न कुंडली यह दर्शाती है कि जन्म के समय क्या लग्न है और सभी ग्रह किस राशि में विचरण कर रहे हैं और चलित से यह स्पष्ट होता है कि जन्म समय किस भाव में कौन सी राशि का प्रभाव है और किस भाव पर कौन सा ग्रह प्रभाव डाल रहा है।

# विशेषज्ञात्री दशा - I

**गुरु**

**शनि**

**बुध**

23-05-1969 09:57  
23-05-1985 09:57

23-05-1985 09:57  
23-05-2004 03:57

23-05-2004 03:57  
23-05-2021 09:57

गुरु	11-07-1971 14:45
शनि	21-01-1974 21:57
बुध	28-04-1976 19:33
केतु	04-04-1977 17:09
शुक्र	04-12-1979 17:09
सूर्य	21-09-1980 21:57
चन्द्र	21-01-1982 21:57
मंगल	28-12-1982 19:33
राहु	23-05-1985 09:57

शनि	26-05-1988 05:00
बुध	03-02-1991 08:09
केतु	14-03-1992 03:48
शुक्र	14-05-1995 18:48
सूर्य	25-04-1996 18:30
चन्द्र	25-11-1997 02:00
मंगल	03-01-1999 21:39
राहु	09-11-2001 20:45
गुरु	23-05-2004 03:57

बुध	19-10-2006 19:24
केतु	17-10-2007 00:21
शुक्र	16-08-2010 21:21
सूर्य	23-06-2011 08:27
चन्द्र	21-11-2012 18:57
मंगल	18-11-2013 23:54
राहु	07-06-2016 09:12
गुरु	13-09-2018 06:48
शनि	23-05-2021 09:57

**केतु**

**शुक्र**

**सूर्य**

23-05-2021 09:57  
23-05-2028 03:57

23-05-2028 03:57  
23-05-2048 03:57

23-05-2048 03:57  
23-05-2054 15:57

केतु	19-10-2021 13:24
शुक्र	19-12-2022 16:24
सूर्य	26-04-2023 12:30
चन्द्र	25-11-2023 14:00
मंगल	22-04-2024 17:27
राहु	11-05-2025 05:45
गुरु	17-04-2026 03:21
शनि	26-05-2027 23:00
बुध	23-05-2028 03:57

शुक्र	22-09-2031 15:57
सूर्य	21-09-2032 21:57
चन्द्र	23-05-2034 15:57
मंगल	23-07-2035 18:57
राहु	23-07-2038 12:57
गुरु	23-03-2041 12:57
शनि	23-05-2044 03:57
बुध	24-03-2047 00:57
केतु	23-05-2048 03:57

सूर्य	09-09-2048 17:45
चन्द्र	11-03-2049 08:45
मंगल	17-07-2049 04:51
राहु	10-06-2050 22:15
गुरु	30-03-2051 03:03
शनि	11-03-2052 02:45
बुध	15-01-2053 13:51
केतु	23-05-2053 09:57
शुक्र	23-05-2054 15:57

# विश्वोत्तरी दशा - II

चन्द्र		मंगल		राहु	
23-05-2054 15:57		23-05-2064 03:57		23-05-2071 21:57	
23-05-2064 03:57		23-05-2071 21:57		23-05-2089 09:57	
चन्द्र	24-03-2055 00:57	मंगल	19-10-2064 07:24	राहु	03-02-2074 02:09
मंगल	23-10-2055 02:27	राहु	06-11-2065 19:42	गुरु	28-06-2076 16:33
राहु	22-04-2057 23:27	गुरु	13-10-2066 17:18	शनि	05-05-2079 15:39
गुरु	22-08-2058 23:27	शनि	22-11-2067 12:57	बुध	22-11-2081 00:57
शनि	23-03-2060 06:57	बुध	18-11-2068 17:54	केतु	10-12-2082 13:15
बुध	22-08-2061 17:27	केतु	16-04-2069 21:21	शुक्र	10-12-2085 07:15
केतु	23-03-2062 18:57	शुक्र	17-06-2070 00:21	सूर्य	04-11-2086 00:39
शुक्र	22-11-2063 12:57	सूर्य	22-10-2070 20:27	चन्द्र	04-05-2088 21:39
सूर्य	23-05-2064 03:57	चन्द्र	23-05-2071 21:57	मंगल	23-05-2089 09:57

## वर्तमान दशा

दशा नाम	ग्रह	आरम्भ तिथि	सम्पति तिथि
महादशा	केतु	23-05-2021 09:57	23-05-2028 03:57
अंतर्दशा	गुरु	11-05-2025 05:45	17-04-2026 03:21
प्रत्यंतर दशा	सूर्य	21-12-2025 15:58	07-01-2026 17:03
सूक्ष्म दशा	मंगल	23-12-2025 22:31	24-12-2025 22:22

\* ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।

# योगिनी दशा - I

## पिंगला (2 वर्ष)

21-10-1982 3:28  
21-10-1984 3:28

## धान्य (3 वर्ष)

21-10-1984 3:28  
21-10-1987 3:28

## भ्रामरी (4 वर्ष)

21-10-1987 3:28  
21-10-1991 3:28

पिंगला	30-11-1982 17:28
धान्य	30-1-1983 14:28
भ्रामरी	21-4-1983 18:28
भद्रिका	1-8-1983 5:28
उल्का	30-11-1983 23:28
सिद्धि	21-4-1984 0:28
संकटा	30-9-1984 8:28
मंगला	21-10-1984 3:28

धान्य	20-1-1985 10:58
भ्रामरी	22-5-1985 4:58
भद्रिका	21-10-1985 9:28
उल्का	22-4-1986 0:28
सिद्धि	21-11-1986 1:58
संकटा	22-7-1987 13:58
मंगला	22-8-1987 0:28
पिंगला	21-10-1987 3:28

भ्रामरी	31-3-1988 11:28
भद्रिका	20-10-1988 9:28
उल्का	20-6-1989 21:28
सिद्धि	31-3-1990 23:28
संकटा	19-2-1991 15:28
मंगला	1-4-1991 5:28
पिंगला	21-6-1991 9:28
धान्य	21-10-1991 3:28

## भद्रिका (5 वर्ष)

21-10-1991 3:28  
21-10-1996 3:28

## उल्का (6 वर्ष)

21-10-1996 3:28  
21-10-2002 3:28

## सिद्धि (7 वर्ष)

21-10-2002 3:28  
21-10-2009 3:28

भद्रिका	30-6-1992 18:58
उल्का	1-5-1993 3:58
सिद्धि	21-4-1994 6:28
संकटा	1-6-1995 2:28
मंगला	21-7-1995 19:58
पिंगला	31-10-1995 6:58
धान्य	31-3-1996 11:28
भ्रामरी	21-10-1996 3:28

उल्का	21-10-1997 9:28
सिद्धि	21-12-1998 12:28
संकटा	21-4-2000 12:28
मंगला	21-6-2000 9:28
पिंगला	21-10-2000 3:28
धान्य	21-4-2001 18:28
भ्रामरी	21-12-2001 6:28
भद्रिका	21-10-2002 3:28

सिद्धि	1-3-2004 6:58
संकटा	20-9-2005 10:58
मंगला	30-11-2005 11:28
पिंगला	21-4-2006 12:28
धान्य	20-11-2006 13:58
भ्रामरी	31-8-2007 15:58
भद्रिका	20-8-2008 18:28
उल्का	21-10-2009 3:28

# योगिनी दशा - II

## संकटा (8 वर्ष)

21-10-2009 3:28  
21-10-2017 3:28

## मंगला (1 वर्ष)

21-10-2017 3:28  
21-10-2018 3:28

## पिंगला (2 वर्ष)

21-10-2018 3:28  
21-10-2020 3:28

संकटा	1-8-2011 11:28
मंगला	21-10-2011 15:28
पिंगला	31-3-2012 23:28
धान्य	30-11-2012 11:28
ब्रामरी	21-10-2013 3:28
भद्रिका	30-11-2014 23:28
उल्का	31-3-2016 23:28
सिद्धि	21-10-2017 3:28

मंगला	31-10-2017 6:58
पिंगला	20-11-2017 13:58
धान्य	21-12-2017 0:28
ब्रामरी	30-1-2018 14:28
भद्रिका	22-3-2018 7:58
उल्का	22-5-2018 4:58
सिद्धि	1-8-2018 5:28
संकटा	21-10-2018 3:28

पिंगला	30-11-2018 17:28
धान्य	30-1-2019 14:28
ब्रामरी	21-4-2019 18:28
भद्रिका	1-8-2019 5:28
उल्का	30-11-2019 23:28
सिद्धि	21-4-2020 0:28
संकटा	30-9-2020 8:28
मंगला	21-10-2020 3:28

## धान्य (3 वर्ष)

21-10-2020 3:28  
21-10-2023 3:28

## ब्रामरी (4 वर्ष)

21-10-2023 3:28  
21-10-2027 3:28

## भद्रिका (5 वर्ष)

21-10-2027 3:28  
21-10-2032 3:28

धान्य	20-1-2021 10:58
ब्रामरी	22-5-2021 4:58
भद्रिका	21-10-2021 9:28
उल्का	22-4-2022 0:28
सिद्धि	21-11-2022 1:58
संकटा	22-7-2023 13:58
मंगला	22-8-2023 0:28
पिंगला	21-10-2023 3:28

ब्रामरी	31-3-2024 11:28
भद्रिका	20-10-2024 9:28
उल्का	20-6-2025 21:28
सिद्धि	31-3-2026 23:28
संकटा	19-2-2027 15:28
मंगला	1-4-2027 5:28
पिंगला	21-6-2027 9:28
धान्य	21-10-2027 3:28

भद्रिका	30-6-2028 18:58
उल्का	1-5-2029 3:58
सिद्धि	21-4-2030 6:28
संकटा	1-6-2031 2:28
मंगला	21-7-2031 19:58
पिंगला	31-10-2031 6:58
धान्य	31-3-2032 11:28
ब्रामरी	21-10-2032 3:28

# योगिनी दशा - III

## उल्का (6 वर्ष)

21-10-2032 3:28  
21-10-2038 3:28

## सिद्धि (7 वर्ष)

21-10-2038 3:28  
21-10-2045 3:28

## संकटा (8 वर्ष)

21-10-2045 3:28  
21-10-2053 3:28

उल्का	21-10-2033 9:28
सिद्धि	21-12-2034 12:28
संकटा	21-4-2036 12:28
मंगला	21-6-2036 9:28
पिंगला	21-10-2036 3:28
धान्य	21-4-2037 18:28
ब्रामरी	21-12-2037 6:28
भद्रिका	21-10-2038 3:28

सिद्धि	1-3-2040 6:58
संकटा	20-9-2041 10:58
मंगला	30-11-2041 11:28
पिंगला	21-4-2042 12:28
धान्य	20-11-2042 13:58
ब्रामरी	31-8-2043 15:58
भद्रिका	20-8-2044 18:28
उल्का	21-10-2045 3:28

संकटा	1-8-2047 11:28
मंगला	21-10-2047 15:28
पिंगला	31-3-2048 23:28
धान्य	30-11-2048 11:28
ब्रामरी	21-10-2049 3:28
भद्रिका	30-11-2050 23:28
उल्का	31-3-2052 23:28
सिद्धि	21-10-2053 3:28

## मंगला (1 वर्ष)

21-10-2053 3:28  
21-10-2054 3:28

\* ध्यान दें - सभी दिनांक दशा  
समाप्ति को दर्शाते हैं।

मंगला	31-10-2053 6:58
पिंगला	20-11-2053 13:58
धान्य	21-12-2053 0:28
ब्रामरी	30-1-2054 14:28
भद्रिका	22-3-2054 7:58
उल्का	22-5-2054 4:58
सिद्धि	1-8-2054 5:28
संकटा	21-10-2054 3:28

# शुभाशुभ अंक

6

2

9

भाग्यांक

मूलांक

नामांक

आपका नाम vijay kumar kushwaha

जन्म दिनांक 20-9-1984

मूलांक 2

मूलांक स्वामी चंद्रमा

मित्र अंक 8,7,9

सम अंक 1,3,4,6

शत्रु अंक 5

शुभ दिन रविवार, सोमवार, शुक्रवार

शुभ रत्न मोती

शुभ उपरत्न चन्द्र मणि

शुभ देवता शिव

शुभ धातु चांदी

शुभ रंग सफेद

शुभ मंत्र || ओम सोम सोमाय नमः ||

## आपके बारे में

आपका मूलांक दो है। मूलांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। जिसके प्रभाववश आप एक कल्पनाशील, कलाप्रिय एवं स्नेहशील स्वभाव के व्यक्ति रहेंगे। आपकी कल्पनाशक्ति उच्च कोटि की रहेगी, लेकिन शारीरिक शक्ति आपकी बहुत अच्छी नहीं रहेगी। आपका बुद्धि चातुर्य काफी अच्छा होगा एवं बुद्धि विवेक के कार्यों में आप दूसरों से बाजी मार ले जायेंगे। जिस प्रकार से आपके मूलांक स्वामी चन्द्रमा का रूप एकसा नहीं रहता समयानुसार घटता - बढ़ता रहता है, उसी तरह आप भी अपने जीवन में एक विचार या योजना पर ढृढ़ नहीं रहेंगे। आपकी योजनाओं में बदलाव होता रहेगा एवं एक योजना को छोड़कर दूसरी को प्रारंभ करने की प्रवृत्ति आपके अंदर पाई जायेगी। धीरज एवं अध्यवसाय की आप में कमी रहेगी। इससे आपके कई कार्य समय पर पूर्ण नहीं होंगे। आत्म विश्वास की मात्रा आप के अंदर कम रहेगी एवं स्वयं अपने ऊपर पूर्ण भरोसा नहीं रख पाएंगे, जिससे कभी - कभी आपको निराशा का सामना करना पड़ेगा। आपकी सामाजिक स्थिति उत्तम दर्जे की रहेगी एवं मानसिक रूप से जिसे आप अपना लेंगे वैसे ही लाभ आपको प्राप्त होंगे। जनता के मध्य आप एक लोकप्रिय व्यक्ति रहेंगे, तथा स्वयं की मेहनत से अपनी सामाजिक स्थिति निर्मित करेंगे। आपको अवस्थानुसार नेत्र, उदर एवं मूत्र संबंधी रोगों का सामना करना पड़ेगा, मानसिक तनाव तथा शीतरोग भी परेशान करेंगे। जल से उत्पन्न रोग कफ, सर्दी - जुकाम, सिरदर्द की शिकायतें भी यदाकदा होंगी।

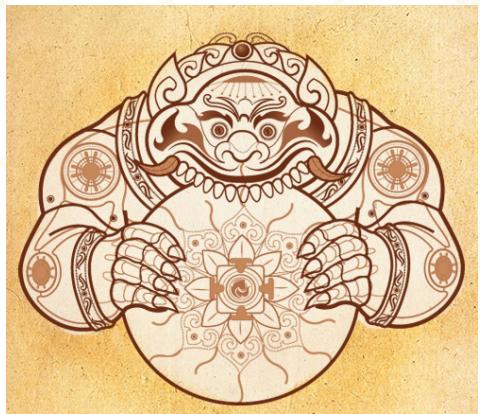
## आपके के लिए शुभ समय

सूर्य 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। कर्क राशि चंद्रमा की स्वयं की राशि है। 13 मई से 14 जून तक सूर्य वृष राशि में होता है, जो कि चंद्रमा की उच्च राशि है। अतः यह समय मूलांक दो के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

## शुभ गायत्री मंत्र

आपको चंद्र के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु चंद्र के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा। चंद्र गायत्री मंत्र : || अमृतांगाय विद्महे कलाञ्चपाय धीमहि तत्रः सोमः प्रचोदयात् ||

# कालसर्प दोष



जब किसी व्यक्ति की कुंडली में राहु और केतु ग्रहों के बीच अन्य सभी ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प दोष का निर्माण होता है। क्योंकि कुंडली के एक भाव में राहु और दूसरे भाव में केतु के बैठे होने से अन्य सभी ग्रहों से आ रहे फल रुक जाते हैं। इन दोनों ग्रहों के बीच में सभी ग्रह फँस जाते हैं और यह जातक के लिए एक समस्या बन जाती है। इस दोष के कारण फिर काम में बाधा, नौकरी में रुकावट, शादी में देरी और धन संबंधित परेशानियाँ, उत्पन्न होने लगती हैं।

कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नहीं पड़ता। किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर भरपूर असर पड़ता है। इसलिए मात्र कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता कही जायेगी। कालसर्प दोष कुंडली में खराब अवश्य माना जाता है किन्तु विधिवत तरह से यदि इसका उपाय किया जाए तो यही कालसर्प दोष सिद्ध योग भी बन सकता है।

अनन्त

कुलिक

वासुकी

शंखपाल

पद्म

महापद्म

तक्षक

कक्षीटक

शंखचूड़

घातक

विषधर

शीषनाग

## आपके जन्मपत्रिका में कालसर्पदोष



### कालसर्प की उपस्थिति

आपकी जन्मपत्रिका में अनुदित रूप में कालसर्प दोष विद्यमान है।

आपको कुंडली में कालसर्प दोष आंशिक रूप से विद्यमान है।

### कालसर्प नाम

अनन्त

### दिशा

आंशिक अनुदित

## कालसर्प दोष फल

आपकी जन्मपत्रिका में अनंत नामक कालसर्प योग बन रहा है।

ऐसे जातकों के व्यक्तित्व निर्माण में कठिन परिश्रम की जरूरत पड़ती है। उसके विद्यार्थ्य व व्यवसाय के काम बहुत सामान्य ढंग से चलते हैं और इन क्षेत्रों में थोड़ा भी आगे बढ़ने के लिए जातक को कठिन संघर्ष करना पड़ता है। मानसिक पीड़ा कभी-कभी उसे घर- गृहस्थी छोड़कर वैरागी जीवन अपनाने के लिए भी उकसाया करती हैं। शारीरिक रूप से उसे अनेक व्याधियों का सामना करना पड़ता है। उसकी आर्थिक स्थिति बहुत ही डांवाडोल रहती है। फलस्वरूप उसकी मानसिक व्यग्रता उसके वैवाहिक जीवन में भी जहर घोलने लगती है। जातक को माता-पिता के स्नेह व संपत्ति से भी वंचित रहना पड़ता है। उसके विकट संबंधी भी नुकसान पहुंचाने से बाज नहीं आते।

## कालसर्प दोष के उपाय

- कालसर्प दोष निवारण यंत्रा घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
- हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।
- गृह में मयूर (मोर) पंख रखें।
- शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
- विद्यार्थीजन सरस्वती जी के बीज मंत्रों का एक वर्ष तक जाप करें और विधिवत उपासना करें।
- राहु की दशा आने पर प्रतिदिन एक माला राहु मंत्रा का जाप करें और जब जाप की संख्या 18 हजार हो जाये तो राहु की मुख्य समिधा दुर्वा से पूर्णाहुति हवन कराएं और किसी गरीब को उड़द व नीले वस्त्रा का दान करें।
- महामृत्युंजय मंत्रों का जाप प्रतिदिन 11 माला रोज करें, जब तक राहु केतु की दशा-अंतर्दशा रहे और हर शनिवार को श्री शनिदेव का तैलाभिषेक करें और मंगलवार को हनुमान जी को चौला चढ़ायें।
- शुभ मुहूर्त में सर्वतोभद्रमण्डल यंत्रा को पूजित कर धारण करें।
- श्रावणमास में 30 दिनों तक महादेव का अभिषेक करें।
- एक वर्ष तक गणपति अर्थर्वशीर्ष का नित्य पाठ करें।
- श्रावण के महीने में प्रतिदिन स्नानोपरांत 11 माला 'नमः शिवाय' मंत्रा का जप करने के उपरांत शिवजी को बेलपत्रा व गाय का दूध तथा गंगाजल चढ़ाएं तथा सोमवार का व्रत करें।

## मांगलिक दोष क्या होता है



जिस जातक की जन्म कुण्डली, लग्र/चंद्र कुण्डली आदि में मंगल ग्रह, लग्र से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा छादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं। कुण्डली में जब लग्र भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव और छादश भाव में मंगल स्थित होता है तब कुण्डली में मंगल दोष माना जाता है। सप्तम भाव से हम दाम्पत्य जीवन का विचार करते हैं। अष्टम भाव से दाम्पत्य जीवन के मांगलीक सुख को देखा जाता है। मंगल लग्र में स्थित होने से सप्तम भाव पर मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पड़ती है। छादश भाव में यदि मंगल स्थित है तब अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है।

मूल रूप से मंगल की प्रकृति के अनुसार ऐसा ग्रह योग हानिकारक प्रभाव दिखाता है, लेकिन वैदिक पूजा-प्रक्रिया के द्वारा इसकी भीषणता को नियंत्रित कर सकते हैं। मंगल ग्रह की पूजा के द्वारा मंगल देव को प्रसन्न किया जाता है, तथा मंगल द्वारा जनित विवाशकारी प्रभावों, सर्वारिष्ट को शांत व नियंत्रित कर सकारात्मक प्रभावों में वृद्धि की जा सकती है।

**लग्रे व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे ।  
शुभ दृग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम् ॥**

## मांगलिक विश्लेषण

**कुल मांगलिक प्रतिशत**

**26.75%**

## मांगलिक फल

कुण्डली में मांगलिक दोष है और प्रभावी है, मिलान के समय इसका ध्यान रखें। आप मांगलिक हैं।



## भाव के आधार पर

राहु आपके कुंडली में लग्न भाव में है।

सूर्य पंचम भाव में कुंडली में स्थित है।

सप्तम भाव में मंगल अवस्थित है।

केतु आपके कुंडली में सप्तम भाव में है।



## दृष्टि के आधार पर

सप्तम भाव राहु से दृष्ट है।

राहु, आपके कुंडली के पंचम भाव को देख रहा है।

आपके कुंडली के द्वादश भाव को शनि देख रहा है।

शनि, आपके कुंडली के अष्टम भाव को देख रहा है।

मंगल की दृष्टि आपके कुंडली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को मंगल देख रहा है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को केतु देख रहा है।

## मांगलिक दोष के उपाय

- चांदी की चौकोर डिब्बी में शहद भरकर हनुमान मंदिर या किसी निर्जन वन, स्थान में रखने से मंगल दोष शांत होता है।
- मंगलवार को सुन्दरकाण्ड एवं बालकाण्ड का पाठ करना लाभकारी होता है।
- बंदरों व कुत्तों को गुड व आटे से बनी मीठी रोटी खिलाएं।
- मंगल चन्द्रिका स्तोत्र का पाठ करना भी लाभ देता है।
- माँ मंगला गौरी की आराधना से भी मंगल दोष दूर होता है।
- कार्तिकेय जी की पूजा से भी मंगल दोष के दुश्प्रभाव में लाभ मिलता है।
- मंगलवार को बताशे व गुड की रेवड़ियाँ बहते जल में प्रवाहित करें।
- मंगली कन्यायें गौरी पूजन तथा श्रीमद्भागवत के 18 वें अध्याय के नवें श्लोक का जप अवश्य करें।



## साढ़ेसाती क्या होता है

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार साढ़े साती तब बनती है जब शनि गोचर में जन्म चन्द्र से प्रथम, छितीय और द्वादश भाव से गुजरता है। शनि एक राशि से गुजरने में ढाई वर्ष का समय लेता है इस तरह तीन राशियों से गुजरते हुए यह साढ़े सात वर्ष का समय लेता है जो साढ़े साती कही जाती है। सामान्य अर्थ में साढ़े साती का अर्थ हुआ सात वर्ष छः मास।

साढ़े साती के समय व्यक्ति को कठिनाईयों एवं परेशानियों का सामना करना होता है परंतु इसमें घबराने वाली बात नहीं हैं। इसमें कठिनाई और मुश्किल हालत जरूर आते हैं परंतु इस दौरान व्यक्ति को कामयाबी भी मिलती है। बहुत से व्यक्ति साढ़े साती के प्रभाव से सफलता की उंचाईयों पर पहुंच जाते हैं। साढ़े साती व्यक्ति को कर्मशील बनाता है और उसे कर्म की ओर ले जाता है। हठी,

अभिमानी और कठोर व्यक्तियों से यह काफी मेहनत करवाता है।

## क्या आप साढ़ेसाती में हैं



### साढ़ेसाती दोष उपस्थित नहीं है।

नहीं, आप पर इस समय साढ़ेसाती का प्रभाव नहीं है।

विचार करने का दिनांक

24-12-2025

शनि राशि

मीन

चंद्र राशि

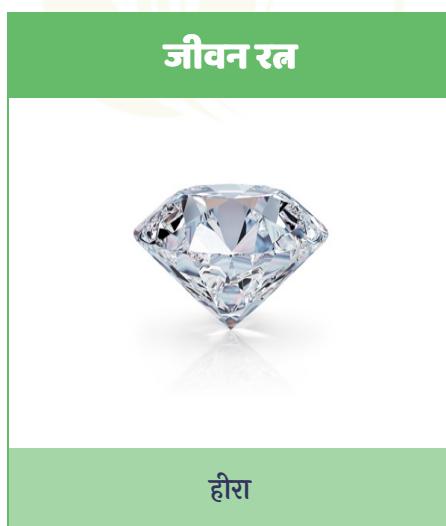
कर्क

वक्री शनि

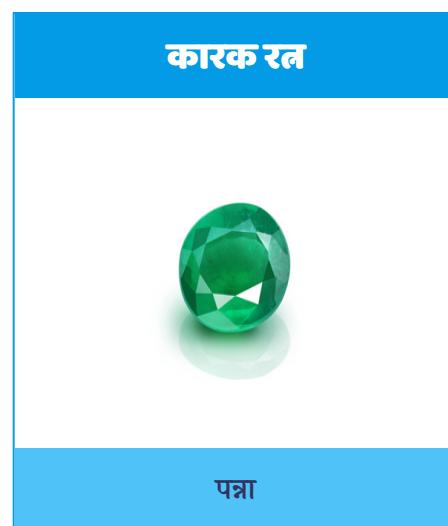
नहीं

## रत्न उपाय विचार

वैदिक ज्योतिष के अनुसार ग्रहों से सूक्ष्म ऊर्जाओं का उत्सर्जन होता है, जिनका हमारी जन्म कुंडली में ग्रहों की स्थिति के अनुसार, हमारे जीवन पर प्रतिवर्ती हितकारी अथवा अनिष्टकारी प्रभाव पड़ते हैं। प्रत्येक ग्रह का अपना एक अनूठा तत्सम्बन्धित ज्योतिषीय रत्न होता है जो उसी ग्रह के अनुरूप ब्रह्मांडीय वर्ण-ऊर्जा का प्रसार करता है। रत्न सकारात्मक किरणों के प्रतिबिंब या नकारात्मक किरणों के अवशोषण द्वारा अपना कार्य करते हैं। ये रत्न केवल सकारात्मक स्पंदनों को ही शरीर में प्रवेश करने देते हैं; इस कारण उपयुक्त रत्न पहनाने से उसके धारण कर्ता पर सम्बंधित ग्रह के लाभदायक प्रभाव को बढ़ाया जा सकता है।



**जीवन रत्न**



**कारक रत्न**



**भाग्य रत्न**

लग्न, शरीर और शरीर से संबंधित सभी बातों का - जैसे स्वास्थ्य, दीर्घायु, नाम, प्रतिष्ठा, जीवन-उद्देश्य आदि का प्रतीक होता है। संक्षेप में, इस में पूरे जीवन का सार समाया है। इसलिए लग्न के स्वामी अर्थात् लग्नेश से संबंधित रत्न को जीवन रत्न कहा जाता है। इस रत्न के गुणों तथा शक्तियों का पूरा लाभ उठाने के लिए इसे आजीवन पहना जा सकता है और पहनना भी चाहिए।

जन्म कुंडली का पंचम भाव भी एक शुभ भाव है। पांचवा भाव बुद्धि, उच्च शिक्षा, संतान, अप्रत्याशित धन-प्राप्ति आदि का धोतक है। इस भाव को 'पूर्व पुण्य कर्मों' का अर्थात् पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों का स्थान भी माना जाता है। इसी कारण इसे शुभ भाव कहते हैं। पंचम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को कारक रत्न कहा जाता है।

जन्म-कुंडली के नवम भाव को भाग्य या प्रारब्ध का स्थान कहा जाता है। यह भाव भाग्य, सफलता, ज्ञान, गुणदोष और उपलब्धियों आदि का धोतक है। यह भाव व्यक्ति द्वारा पिछले जन्मों में किए गए अच्छे कर्मों के कारण प्राप्त होने वाले फल स्वरूप आनंद की ओर संकेत करता है। नवम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को भाग्य रत्न कहते हैं। इस रत्न को धारण करने से भाग्य में वृद्धि होती है।

## जीवन रत्न - हीरा



विकल्प	ओपल / जिरकॉन	दिन	शुक्रवार
उंगली	कनिष्ठा	अधिदेवता	शुक्र
भार	1 - 4.25 कैरेट	धातु	चांदी



### विवरण

हीरा रत्न का स्वामी ग्रह शुक्र है। हीरा धारण करने से धैर्य, सफलता, धन, समृद्धि, विमलता की प्राप्ति होती है। हीरा धारण करने वाला व्यक्ति निःरुक्त, बुद्धिमान और शिष्ट होता है। हीरा पहनने से धारक धार्मिक शास्त्रों में प्रवीण बनाता है। यह रत्न बुरी आत्माओं के हानिकारक प्रभावों और साँप के दंश से भी संरक्षण करता है।



### भार व धातु

वजन में १-१/२ कैरेट का दोषरहित हीरा पहनना चाहिए। इसे प्लटिनम या चांदी की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए। अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके।



### पहनने का समय

हीरा को शुक्ल पक्ष के किसी भी शुक्रवार को सूर्योदय के बाद धारण किया जा सकता है।



### मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें। हीरा धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें:

ॐ द्रां द्रीं द्रीं सः शुक्राय नमः



### प्राण प्रतिष्ठा

हीरे की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें।



### उंगली

मंत्र जाप के बाद, हीरा को दाहिने हाथ की छोटी उंगली अर्थात् कनिष्ठा में धारण किया जा सकता है।



### विकल्प

हीरा के स्थान पर सफेद बीलम, सफेद जिक्रोन और सफेद तूरमली आदि विकल्प रत्नों को भी धारण किया सकता है।



### सावधानी

हीरा को माणिक, मोती, लाल मूँगा और पुखराज के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

## कारक रत - पन्ना



विकल्प	हरा गोमेद
उंगली	कनिष्ठा
भार	4 - 6.25 कैरेट

दिन	बुधवार
अधिदेवता	बुद्ध
धातु	स्वर्ण



### विवरण

पन्ना का स्वामी ग्रह बुध है। पन्ना धारण करने से अच्छे स्वास्थ्य, बलवान शरीर, धन, संपत्ति और अच्छी नेत्र दृष्टि की प्राप्ति होती है। यह दुष्ट आत्माओं, सर्प दंश और बुरी बज़र से कुप्रभावों से बचाता है। पन्ना मिर्गी एवं पागलपन के इलाज और बुरे स्वप्नों से संरक्षण में भी सहायक है।



### भार व धातु

पन्ना का वजन ३ कैरेट से अधिक होना चाहिए। इसे सोने की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए। अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत त्वचा को छू सके।



### पहनने का समय

पन्ना रत चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी बुधवार को सूर्योदय के दो घंटे बाद धारण किया जा सकता है।



### मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें। पन्ना धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें।

ॐ ब्रां ब्रौं सः बुधाय नमः



### उंगली

मंत्र जाप के बाद, पन्ना की अंगूठी को दाहिने हाथ की कनिष्ठा अर्थात छोटी उंगली में धारण करें।



### विकल्प

पन्ना के स्थान पर अक्वामरीन (हरित बील), पेरिडोट, हरा जिक्रीन, ग्रीन एगेट या हरा जेड(हरिताश्म) जैसे विभिन्न विकल्प रत भी उपयोग में लाये जा सकते हैं।



### सावधानी

ध्यान रहें कि पन्ना को लाल मूंगा, मोती, पुखराज और उनके विकल्प रतों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

## भाग्य रत्न - नीलम



विकल्प	नीली
उंगली	मध्यमिका
भार	3 - 4.25 कैरेट

दिन	शनिवार
अधिदेवता	शनि
धातु	चांदी



### विवरण

नीलम रत्न का स्वामी ग्रह शनि है। नीलम धारण करने से स्वास्थ्य, धन, दीर्घायु, सुख, समृद्धि, नाम और यश की प्राप्ति होती है।



### भार व धातु

वजन में कम से कम ५ कैरेट का दोषरहित नीलम पहनना चाहिए। इसे स्टील या अष्ट धातु से बनी अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए। अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके।



### पहनने का समय

नीलम रत्न को किसी भी शनिवार को सूर्यास्त से दो घंटे पहले धारण किया जा सकता है।



### उंगली

मंत्र जाप के बाद, नीलम को मध्यमा अर्थात् बीच की अंगुली में धारण किया जा सकता है।



### मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात् इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें। नीलम धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें।

ॐ प्रां प्रीं प्रीं सः शनैश्चराय नमः



### विकल्प

नीलम के स्थान पर नीला जिक्रोन, जामुनिया, नीली तूरमुली, लाजावर्द, ब्लू स्पिनल और नीली जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं।



### प्राण प्रतिष्ठा

अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें।



### सावधानी

ध्यान रहें कि नीलम को माणिक, मोती, लाल मूँगा और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।



## लग्न फल - वृष

स्वामी	शुक्र
प्रतीक	बैल
विशेषताएँ	पृथ्वी तत्त्व, स्थिर, दक्षिण
भाग्यशाली रत्न	नीलम
ब्रत का दिन	शुक्रवार

देहं रूपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम् ।  
सुखं दुःखं स्वभावज्य लग्नभावान्निरोक्षयेत् ॥

वृषभ लग्न के व्यक्ति बलवान, अनवरत, दृढ़-संकल्पी धीरे धीरे स्वयं को बदलने वाले, स्थिर, शांत(जब तक बहुत परेशान ना किया जाए—अन्यथा जंजाल का कारण) - वफादार, व्यावहारिक, ज़िद्दी, गैर आक्रामक, सहनशील, स्नेही, परिश्रमी, निष्क्रिय और सामान्यतः अभिमानी और मन की एक सामान्य धीमी गति के साथ अपनी आस्थाओं से प्रतिबद्ध होते हैं।

वृषभ लग्न के व्यक्ति किसी के नेतृत्व में या, मान-मनोव्वल से तो कार्य कर सकते हैं लेकिन उनसे जोर ज़बरदस्ती से कुछ भी नहीं करवाया जा सकता। संसाधन और संपत्ति, चाहे वह व्यक्ति हों या वित्त, आप के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

“ आप परिस्थितियों को बनाना और विकसित करना चाहते हैं, लेकिन आप से जल्दबाजी में यह नहीं करवाया जा सकता। आप चीजों को स्वयं ही पाना चाहते हैं और अपनी खुद की कड़ी मेहनत के व्यावहारिक परिणाम देखना चाहते हैं।

आप दूसरों द्वारा आरम्भ किये गए कार्यों को सफलता पूर्वक ग्रहण कर लेते हैं और आगे ले जाते हैं। सच्ची दृढ़ता और इच्छा से आपको सफलता प्राप्त होती है। मीठे या स्वादिष्ट भोजन से आपका प्यार को आप के वजन को बढ़ा सकता है।

आप जो भी कार्य करें उसे कम सख्ती से करने की कोशिश करें। अपने अन्दर ईर्ष्या की भावना और हावी होने की प्रवृत्ति को पनपने ना दें। बीमारी और दर्द से आप डरते भी हैं और घृणा भी करते हैं।

“ वृषभ लग्न का स्वामी शुक्र है, इसलिए शुक्र आपकी कुण्डली में महत्वपूर्ण होगा। ”



## सीखने के लिए आध्यात्मिक सबक

अनासक्ति

### सकारात्मक लक्षण

व्यावहारिक

विश्वसनीय

शांत और धैर्यवान

अनुरागशील

### नकारात्मक लक्षण

आलसी

अधिकारात्मक

जिद्दी

चिंतित



With the help of our experts we does all the complex astronomical and algorithmic calculations for your horoscope and provide you this Janam Patrika in PDF format.

**iRise WebnApp Technologies Pvt. Ltd.**

<http://www.astrorobo.com>  
+91-79990-95593  
iwebnapp@gmail.com